यूनिट 2 भारतीय संगीत के विकास में आमीर खुसरो का अवदान

सूचीपत्र

1.0 **भूमिका**

1.1 **अधिगम की संप्राप्ति**

1.2 **अमीर खुसरो का जन्म एवं पारिवारिक परम्परा**

1.3 **खुसरो की साहित्यिक रचनाएँ**

1.4 **अभ्यास – 1**

1.5 **अमीर खुसरो के जीवन में संगीत**

1.6 **अमीर खुसरो द्वारा प्रचारित संगीत की कुछ विधाएँ**

1.7 **सितार तथा तबले के प्रवर्तक अमीर खुसरो**

1.8 **खुसरो का अंतिम जीवन**

1.9 **अभ्यास– 2**

1.0 भूमिका

अबुल हसन यामिनुद्दीन खुसरो (1252-1325 ई.) जो अमीर खुसरो के नाम से जाने जाते हैं, एक महान संगीतकार, कवि एवं विद्वान थे जो दिल्ली सल्तनत के समय रहे और सात सुल्तानों के साथ दरबारी होने का दायित्व निभाया । वो एक कवि थे, संगीतज्ञ भी थे जो संगीतकार, गीतकार, कलाकार एवं वाद्य यन्त्रों के निर्माता भी माने जाते हैं । कई विधाओं के प्रवर्तन का श्रेय भी उनको दिया जाता है। उनका पाण्डित्य संस्कृत, हिन्दी, फारसी, अरबी भाषाओं में बखूबी था और इस कारण उन्होंने संगीत की कई पारम्परिक विधाओं को साधारण जन मानस की रुचि अनुसार लोकप्रिय बनाया। उन्होंने उस समय प्रचलित भारतीय शास्त्रीय संगीत की भली-भाँति ज्ञान प्राप्त की थी। वे कई दरबारों में गायक रहे और मौका पाकर उन्होंने प्रचलित एवं पारम्परिक कई संगीत विधाओं को नया नाम दिया जैसे तराना, ख्याल इत्यादि। उन्होंने अपने जीवनकाल में कई कविता, गज़ल, बन्दिशें, दोहे, पहेली इत्यादि की रचना कर ख्याति प्राप्त की थी। उस समय बहुत सारे इतिहासकार और लेखक थे पर सबसे प्रसिद्ध फारसी लेखकों में उनकी ही गिनती होती थी।

अधिगम की संप्राप्ति:-

इस अध्याय को पढ़ने के बाद विद्यार्थी -

- भारतीय साहित्य में अमीर खुसरो का योगदान को समझ पाएँगे ।
- भारतीय संगीत के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पक्ष का विश्लेषण कर पाएंगे ।
- भारतीय संगीत में अमीर खुसरो का योगदान को समझ कर उसका विवरण दे पाएँगे ।
- तुर्की और फारसी संस्कृति का भारतीय संस्कृति में संयोजन को समझ पाएँगे और विश्लेषण कर पाएंगे ।

1.1 अमीर खुसरो का जन्म एवं पारिवारिक परम्परा

अमीर खुसरो का जन्म 1252 में उत्तर प्रदेश के एटा जिले में स्थित पटियाली नामक स्थान में (पश्चिमी उत्तर प्रदेश, बदायूँ के पास) हुआ था, उनके पिता अमीर सैफुद्दीन शमसी तुर्की जाति के थे व सुल्तान इल्तुतमिश के (1211-36) पुलिस बल में शामिल थे। खुसरो की माता बीबी दौलत नाज़ भारतीय थीं। ये रावत अरज़ की पुत्री थीं। जो नवें सुलतान गियासुद्दीन बलबन के रक्षा मन्त्री थे। खुसरो की पत्नि का कोई ज़िक्र नहीं मिल पाया लेकिन उनकी कविताओं में बेटी और दो बेटों के बारे में उल्लेख मिलता है।

खुसरो के पिता अमीर सैफुद्दीन शमसी, 'केश' नामक नगर में रहते थे जो वर्तमान के उज़बेकिस्तान में समरकन्द के पास है। अत्याचारी मंगोल शासक चगेंज खान ने लूटपाट मचाकर इस स्थान की बर्बादी कर दी, जिस कारण वहाँ के लोग उस जगह से भाग निकले। खुसरो के पिता और उनकी जाति के लोग 'केश' छोड़कर बल्क नामक जगह आ गए (जो आज के अफगानिस्तान में स्थित है) जो कुछ सुरक्षित था।

वहाँ से उन्होंने सुलतान इल्तुतमिश को अपना प्रतिनिधि भेजकर सहायता मांगी जो उस समय दिल्ली मे राज्य संभाल रहे थे। इल्तुतमिश स्वयं तुर्की थे और मध्य एशिया के इसी प्रान्त के निवासी रह चुके थे वह भी इसी तरह के हालात के शिकार थे और इस कारण उन्होंने न ही उनको अपने दरबार और राज्य में पनाह दी बल्कि सभी अफसरों को ज़मीन एवं रियासत देकर सहायता की थी। 1230 में अमीर सैफुद्दीन को पटियाली नामक रियासत अनुदान में मिली। खुसरो के दो भाई और एक बहन थी। जब वह आठ वर्ष के थे। तब उनके पिता का देहांत हो गया। इस कारणवश उनके नाना एवं मामा के घर उनकी परवरिश हुई। उनके नाना अस्सी वर्ष तक दिल्ली के दरबार में प्रभावशाली एवं शक्तिशाली वज़ीरों में थे। खुसरो के नाना 113 साल तक जीवित रहे। नाना के ही घर में खुसरो की मुलाक़ात सूफ़ी सन्त निज़ामुद्दीन औलिया से हुई। खुसरो इनसे बहुत प्रेरित हुए और जीवन भर उन्हीं के मार्ग दर्शन पर चलते रहे।

1.2 खुसरो की साहित्यिक रचनाएँ

खुसरो अपने समय के ख्याति सम्पन्न कवि, साहित्यिक एवं विद्वान माने जाते थे। वे तुर्की अरबी, फारसी एवं हिन्दवी (जो मध्यकाल में भारत के उत्तरी प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा थी) भाषाओं में पारदर्शी थे। अमीर खुसरो ने भारतवर्ष में जन्म लिया था और उन्हें अपनी मातृभूमि से बहुत प्रेम था। उनकी कृतियों में भली भाँति इसका परिचय मिलता है अपनी हर साहित्यिक कृति में उन्होंने भारत के पर्यावरण, वनस्पति एवं पशु, संस्कृति एवं ज्ञान की सराहना की है।

उन्होंने अपने आपको तुर्क-ए-हिन्दुस्तानी माना और सभी को इसका विश्वास दिलाया। फारसी गीतकार शिराजुल्ला हाफ़िज़ उन्हें 'तूति-ए- हिन्द' या 'भारत का गायक पक्षी' नाम से सम्बोधित करते थे और इस पर खुसरो बहुत गर्व महसूस करते थे। खुसरो के साहित्य को पढ़ने से यह अहसास होता है कि तुर्की शासक जो भारत में राज-पाट सम्भाले हुए थे, इस देश से सांस्कृतिक गठबंधन में बंध चुके थे और वे अपने आप को भारत से भिन्न नहीं मानते थे। इस समय फारसी में भारतीय इतिहास लिखने का दौर चला। इसी फारसी भाषा के तहत भारत एवं मध्य एशिया और ईरान के साथ क़रीबी सांस्कृतिक रिश्तें बने। क्रमश: फारसी, प्रशासनिक एवं राजनैतिक भाषा बन गयी। समृद्ध व्यक्ति एवं उनके अनुकरण करने वाले सभी इस भाषा कि दाद देने लगे। यह प्रथा ना ही सिर्फ उत्तर भारत में प्रचलित हुई बल्कि क्रमश: दिल्ली सल्तनत का पूरे देश में विस्तार होने के साथ साथ दक्षिण

भारत एवं दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक प्रान्तों में भी फारसी भाषा महत्वपूर्ण बन गई। अत: संस्कृत एवं फारसी, देश के राजनीति, धर्म, दर्शन शास्त्र, साहित्यिक विधाओं के सम्पर्क की कड़ी बन गई।

खुसरो, समाज की गतिविधियों को परखने वाले बुद्धिजीवी प्रेक्षक थे और उन्होंने गीत एवं पहेलियों द्वारा इसकी अभिव्यक्ति की थी। उन्होंने पहेलियाँ लिखने की एक नवीनतम विधि अपनाई जो 'कह-मुकरनी' नाम से जानी जाती है। आज भी उनके गीत एवं पहेलियाँ उत्तर भारत के ग्रामीण इलाकों में प्रचलित है क्योंकि मध्ययुग के व्यक्तियों की पसन्द आज के युग से काफी हद तक मिलती-जुलती है। वर्तमान युग में भी खुसरो की कही गई बातें प्रासंगिक और अनुकरण के योग्य हैं।

मूलत: खुसरो ने अपने लेख फारसी में लिखी लेकिन हिन्दवी में लिखी लेख लोगों की ज़ुबान पर ज्यादा सुनाई देती है। हिन्दवी जैसी देशी भाषा के विकास का श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है। जो कि अरबी, संस्कृत, फारसी और कुछ देसी भाषाओं का सम्मिश्रण है। 'हिन्दवी' भाषा ग्यारहवी शताब्दी से प्रचलित हुआ। अमीर खुसरो के सूफियाना हिन्दवी और फारसी कविताएँ आज भी जीवन्त और गतिशील परम्परा में पाई जाती हैं। उनकी कुछ रचनाएँ निम्नलिखित है –

1) खज़ा इन अल फुतुह - जिसे तारिख-ए-अलाई भी कहते है।

2) नुह सिफ़र

3) तुगलक नमाह

4) इजाज़ी खुसरवी

5) खमसा ए खुसरौ

6) निहायत-उल-कमाल

गंगा-जमुनी तहज़ीब के लिए अमीर खुसरो को ख़ास याद किया जाता है जो हिन्दुस्तान कि संस्कृति में हिन्दु और मुस्लिम कलाओं, भाषा इत्यादि का समागम है। उन्होंने हिन्दुस्तानी और इस्लाम के सांस्कृतिक परम्परा को विशेष आधार दिया। खुसरो की परवरिश ऐसे स्थान में हुई जहां दोनों संस्कृति का सरावोर था। इस कारण उन्होंने दोनों कि प्रवृत्तियो को अपनाकर अपनी रचनाओं में उसका उल्लेख किया। कविताओं एवं पहेलियों के कारण उनको 'अमीर' के उपाधि से नवाज़ा गया था।

अभ्यास 1

क) खुसरो किन भाषाओं के जानकार थे ?

ख) 'हिन्दवी' शब्द से आप क्या समझते हैं?

ग) खुसरो को 'तूति-ए- हिन्द'क्यों कहा गया ?

घ) भारतीय – इस्लाम की मिल-जुली परम्परा खुसरो के समय प्रचलित थी। उसके बारे में लिखें ?

ङ) गंगा-जमुना तहज़ीब से आप क्या समझते हैं?

च) 'गंगा-जमुना तहज़ीब' कलाकारों के लिए एक मनमोहक परम्परा है। इस पर एक परियोजना बनाएँ जिसमें ऐतिहासिक अवधारनाएँ, विभिन्न मनुष्यों का योगदान, वर्तमान स्थिति एवं वर्तमान के राजनैतिक एवं सामाजिक स्थिति को देखते हुए इसके गुण या अवगुण का विश्लेषण करें।

अमीर खुसरो के जीवन में संगीत

खुसरो एक कुशल कलाकार एवं संगीतज्ञ थे जिन्होंने बहुत-सी सांगीतिक विधाएँ एवं कुछ वाद्य यन्त्रों का विकास किया। सूफी सन्त निज़ामुद्दीन औलिया के धार्मिक संगीत सभाओं (समा) में वे हमेशा सम्मिलित होते थे। इसके अतिरिक्त अनेक गज़लों की रचना फारसी और ब्रज भाषा के मिश्रण से की। खुसरो को अनेक नवीन राग जैसे - सरपर्दा, साजगीरी, यमन, रात की पूरीया, पूर्वी, बरारी, जिलफ और शहाना आदि रागों का आविष्कारक माना जाता है। उन्हे सवारी, झूमरा, खमसा, जत, फरोदस्त, पश्तो, सूलफाक, आडा चौताल और जल्द त्रिताल आदि कई नवीन तालों की रचनाकार और प्रवर्तक भी माना जाता है। गायन के क्षेत्र में अमीर खुसरो ने अनेक नवीन गीत विधाओं की रचनाएं कीं जैसे - कौल, कलबाना, कसीदा, नक्श, रंग तरंग, गुल, निगार, कव्वाली और तराना आदि। इनमें से कौल, कलबाना, कसीदा, और कव्वाली धार्मिक रचनाएं है और सूफी सन्तों द्वारा भारत में आज भी गाई जाती है इनके अतिरिक्त तराना शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत गाया जाता है। 'ग़जल' भी उन्हीं की कृति है जो आज भी भारत और पाकिस्तान में बहुत लोकप्रिय है।

अमीर खुसरो की फारसी कविताओं में संगीत एवं वाद्य यन्त्रों की जो छवि शब्दों द्वारा अंकित की गई है, उससे उनके सांगीतिक कला का ज्ञान स्पष्ट प्रतिबिम्बित होता है। उनकी कृति 'नूह सिपिहर' में कवि ने लिखी है कि विभिन्न राज्यों के संगीतकारों ने बहुत कुछ नया बनाया तो है लेकिन, मूल तत्वों में वे कुछ नवीनीकरण नहीं कर पाए। 'इजाज़ी खुसरवी' में खुसरो ने वाद्य यन्त्रों के बारें में बताया है। मध्य एशिया के कुछ कलाकारों का भी ज़िक्र है जिससे पता चलता है कि इन कलाकरों के साथ भारतीय कलाकारों की प्रतियोगिता हुई थी। 'गोपाल' नाम के एक कलाकार का इस पुस्तक में ज़िक्र है जिससे पता चलता है कि उनके साथ खुसरो की गायन प्रतियोगिता हुई थी जिसमें वे बेहतर पाए गए और गोपाल को 'नायक' की उपाधि प्राप्त हुई।

बहुत सी बेहतरीन राग, बन्दिशें एवं लय के विभिन्न स्वरूप अमीर खुसरो की देन है। उनके द्वारा प्रवर्तित राग सरपर्दा, साजगीरी, यमन, रात की पूरीया, पूर्वी, बरारी, जिलफ और शहाना आदि राग आज भी प्रचलित हैं। उनकी राग बहार में एक रचना 'सकल बन फूल रही सरसों' जो कव्वाली और द्रुत ख़याल दोनों विधाओं में गाई जाती है आज भी बहुत प्रचलित है। किन्नरी वीणा और पुष्कर वाद्य से आगे चलकर बनी सितार और तबला जैसे वाद्य यन्त्र को भी जनता तक पहुँचाने और लोकप्रिय बनाने का श्रेय उनको दिया जाता है।

उत्तरी भारत में मनाए गए बसन्त के मौसम के उत्सव खुसरो को बहुत प्रेरित करते थे। उनकी रचनाएँ जैसे "आज रंग है ए माँ", "निज़ाम तोरी सूरत पे बलिहारी" 'मोहे अपने ही रंग में रंग दे रंगीले' इत्यादि इस बात को स्पष्ट करते हैं। इस मौसम के अनेक रंगों को उन्होंने एक दार्शनिक नज़रिये से सोचा और अपने आध्यात्मिक गुरू से जुड़ने का ज़रिया बनाया था।

अमीर खुसरो द्वारा प्रचारित संगीत की कुछ विधाएँ

- **कव्वाली**

फारसी, अरबी, तुर्की और भारतीय आध्यात्मिक विधाओं के समागम से खुसरो ने कव्वाली को जन्म दिया। यह सूफियों की भक्ति अभिव्यक्त करने के लिए संगीत पद्धति है जो समूह में पेश की जाती है। एक मुख्य गायक, पीर पैगम्बर के गुणों को सुर में गाते हैं और उसी को समूह में गाने वाले लोग दोहराते हैं। ये दरगाह, मस्जिद और अब प्रेक्षा ग्रह में खूब गाए बजाए जाते हैं और इसकी लय से प्रभावित होकर लोग इसको बहुत पसन्द करते हैं। इसको गाने के लिए स्वर एवं लय पर बहुत निपुणता की आवश्यकता होती है। स्वरों की लड़ियाँ, तानों की द्रुत गति और लयात्मकता इसके मूल तत्व हैं। खुसरो के शागिर्द जो कव्वाली गाने में दक्ष थे उन्हें कव्वाल कहा जाने लगा, ये सिर्फ

मुसलमान धर्म के धार्मिक गीत गाते थे। कलावन्त भी एक और समूह बना जो कव्वाली को धीमी गति में पेश करते थे।

- **तराना और त्रिवट**

तराना और त्रिवट के सृजन का श्रेय भी खुसरो को दिया जाता है। संगीतज्ञ ठाकुर जयदेव कहते हैं "तराना सम्पूर्ण खुसरो द्वारा रची हुई विद्या है। फारसी में तराना का अर्थ है गीत, भारतीय संगीत में 'निर्गीत' विधा, जिसमें शुष्क अक्षर (अर्थहीन शब्द) और पाटाक्षर (मृदंग/ पख़ावज के बोल) से खुसरो बहुत प्रभावित हुए। भरत के काल से (दूसरी से चौथी शताब्दी) इस तरह के गीतों का प्रचलन था, लेकिन यह बहुत कर्ण प्रिय न था, खुसरो ने इस तरह की विधि में दो तरह की नवीनीकरण की थी। सर्वप्रथम उन्होंने उन फारसी शब्दों का प्रयोग किया था जो स्वच्छ सरल भाव से बोले जा सकें। द्वितीय उन्होंने शब्दों को इस तरह बाँधा कि उसका कुछ अर्थ बन सके। कुछ हिन्दी शब्द का व्यवहार भी खुसरो ने इस रचना में डाला। इस तरह इन रचनाओं को लोग गाने लगे और वर्तमान काल में भी यह अत्यन्त लोकप्रिय है।

तिरवट एक विधा है जिसमें पटाक्षर या तबला पखावज़ मृदंग के बोल स्वरावली और तराना के नोम तोम गाए जाते हैं। दोनों विधाएँ ही विशिष्ट राग में गाए जाते हैं लेकिन तराना द्रुत लय में गाई जाती है।

सितार तथा तबले के प्रवर्तक अमीर खुसरो

अमीर खुसरो को दो वाद्य यन्त्र तबला और सितार के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है। यह बात शताब्दियों से प्रचार में है। लेकिन शोधकर्ताओं ने निरन्तर इस बात पर सोच विचार एवं अभिलेखों की जाँच करके यह पाया है कि सितार की उत्पत्ति किन्नरी वीणा से हुई और तबला पुष्कर वाद्य का संशोधित रूप है। खुसरो ने त्रितन्त्री वीणा (तीन तार वाले तत् वाद्य) को 'सहतार' नाम दिया। फ़ारसी में सहतार का अर्थ है तीन तार। यही आगे चलकर सितार के नाम से मशहूर हुआ। तबला के सन्दर्भ में कई पुस्तक, ग्रन्थों एवं ऐतिहासिक पोथियों को टटोल के कहीं भी अमीर खुसरो का नाम नहीं मिल पाया है। तेरहवीं से अठारवीं शताब्दी के सभी शोध बताते हैं कि तबला पुष्कर वाद्य से प्राप्त हुआ। इसीलिए यह मानना कतिपय गलत नहीं होगा कि अमीर खुसरो ने दोनों वाद्यों का पुनः प्रचार एवं प्रसार किया होगा जिस कारण से उनका नाम इन दोनों वाद्यों के साथ जुड़ गया । ये दोनों वाद्य आज बहुत लोकप्रिय हैं और क्रमश: इनकी बनावट या बजाने की पद्धति में संशोधन हो रहे हैं।

खुसरो का अंतिम जीवन

खुसरो ने अपने युवा काल में ही दिल्ली के सूफ़ी संत मोहम्मद निज़ामुद्दीन औलिया को अपना अध्यात्म गुरू माना जो चिश्ती दरवेश के अनुयायी थे। 1310 में वे उनके शागिर्द बन चुके थे। उनके अध्यात्म गुरू के देहावसान के बाद खुसरो बहुत दु:खी रहे और संसार के विभिन्न कर्मों से उन्होंने मुँह मोड़ लिया। 72 साल की आयु में खुसरो भी इस दुनिया को छोड़कर चल बसे। उनकी आखिरी इच्छानुसार गुरू के पास ही उनको दफनाया गया।

अभ्यास– 2

1. कव्वाली पर १०० शब्दों का लेख लिखो।
2. सुमेलित कीजिए

क) त्रितन्त्री वीणा	शुष्क अक्षर, पाटाक्षर
ख) संगीत की विधा	नोम तोम तन न तोम
ग) निर्गीत	त्रिवट
ध) कव्वाली	दिल्ली सल्तनत
ड.) तराना	सूफ़ी गीत
च) अमीर खुसरो- कवि	सेहतार

3. अमीर खुसरो द्वारा रचित दो बन्दिशें खोजें, उन्हें लिखें एवं याद करें।